नीति - धारा

कवि परिचय :

रहीम

रहीम का जन्म सन् 1556 में हुआ। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। रहीम अरबी, फारसी, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे जानकार थे। इनकी नीतिपरक उक्तियों पर संस्कृत कवियों की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। रहीम मध्ययुगीन दरबारी, संस्कृति के प्रतिनिधि कवि माने जाते है। अकबर के दरबार में हिन्दी कवियों में इनका महत्वपूर्ण स्थान रहा। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम अपने कोमल स्वभाव के कारण अपने समय के कर्ण माने जाते थे। रहीम के काव्य का मुख्य विषय श्रृंगार,नीति और भक्ति है। रहीम बहुत लोकप्रिय कवि थे। इनके दोहे सर्वसाधारण को आसानी से याद हो जाते हैं। इनके नीति परक दोहे अधिक प्रचलित हैं। जिनमें दैनिक जीवन के दृष्टान्त देकर कवि ने उन्हें सहज, सरल और बोधगम्य बना दिया है। रहीम का अवधी और ब्रज भाषा पर समान अधिकार था। इन्होंने अपने काव्य में प्रभावपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है। प्रसादगुण का अधिकाधिक प्रभाव उनकी भाषा में दिखता है। दोहा, सोरठा, बरवै छंद में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार की छटा दिखाई देती है। सन् 1626 में इनकी मृत्यु हो गई।

रहीम की प्रमुख कृतियाँ हैं- रहीम सतसई, श्रृंगार सतसई, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली, बरवै, भाषिक भेदवर्णन। ये सभी कृतियाँ `रहीम ग्रंथावली' में समाहित हैं।

हिन्दी के नीतिकारों में रहीम का स्थान सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्य के लिए यह गौरव की बात है कि उन्होंने हिन्दू संस्कृति को अपनाते हुए कृष्ण काव्य परम्परा में उच्चकोटि के कवि के रूप में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है।

व्यक्ति और समाज के सार्थक और समुन्नत समन्वय की आधार-भूमिका निर्मित करने वाले विचार तत्वों को नीति के अंतर्गत ग्रहण किया जाता है। जीवन को जीना एक कला है। इस कला के अंतर्गत व्यक्तित्व विकास को सामाजिक विकास का अंग मानते हुए व्यक्ति चरित्र के परिष्करण को महत्त्व दिया जाता है। इसके साथ ही साथ नीति जीवन के प्रति सकारात्मक बोध उत्पन्न करने की एक शिक्षा शैली भी है।

नीति कथन जीवन की जटिलताओं को सहज रूप से सुलझाने में सहायक होते हैं। व्यावहारिक जीवन के अनेक अनसुलझे प्रश्नों को हल करने में नीतिपरक रचनाओं का अपना महत्व रहता है। अतः अनेक नीति कथन समाज में मुहावरों और लोकोक्तियों के समान प्रयुक्त होने लगते हैं। हिन्दी साहित्य में प्रायः सभी कवियों ने अपनी कविताओं में प्रसंगानुकूल नीति कथनों को स्थान दिया है।

भक्तिकाल में नीति काव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी काल में नीति काव्य के श्रेष्ठ कवि के रूप में रहीम, गिरधर, वृन्द जैसे कवि सक्रिय रहे हैं। कबीर, तुलसीदास, जायसी, सूरदास आदि भक्त कवियों ने भी नीति विषयक विचारों को अपने काव्य में स्थान प्रदान किया है। काव्य का एक उद्देश्य अपने पाठक को शिक्षित करना भी है। नीतिकाव्य काव्य के इसी उद्देश्य की पूर्ति करता है।

रहीम के दोहे

अमर बेलि बिनु मूल की, प्रतिपालन है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहि तजि, खोजत फिरिये काहि॥

रहिमन चुप ह्वे बैठिये, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै देर॥

खीरा सिर तै काटिये, मलियत लोन लगाय।
रहिमन कडुवे मुखन को, चहिअत यही सजाय॥

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥

काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
रहिमन भँवरी के भये, नदी सिरावत मौर॥

एकैं साधै सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय॥

कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिये, तैसोई फल दीन॥

कहि रहीम सम्पत्ति सगैं, बनत बहुत यह रीति।
बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत॥

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर न मिले, मिले गाँठ पड़ जाय॥

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पिअत अघाय ।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥

वृन्द के दोहे

कवि परिचय :

वृन्द

कवि वृन्द का पूरा नाम वृन्दावन था। इनका जन्म मेड़ता में सन् 1643 ई0 में हुआ। दस वर्ष की अवस्था में विद्या अध्ययन के लिए ये काशी चले गए। काशी में व्याकरण, साहित्य, वेदान्त, गणित, दर्शन आदि का ज्ञान प्राप्त करते हुए काव्य सृजन का कार्य किया। साहित्य जगत में कवि वृन्द का असीम योगदान रहा। सन् 1723 में किशनगढ़ में इनका देहावसान हुआ।

वृन्द की प्रमुख रचनाएँ हैं - बारहमासा, नयन पचीसी, भाव पंचशिखा, पवन पचीसी, यमक सतसई व वृन्द सतसई आदि।

वृन्द की रचनाओं में नीति, भक्ति व शृंगार का सुन्दर वर्णन हुआ है। दोहा इनका प्रिय छंद है। इनकी काव्य भाषा ब्रज है। इन्होंने लोक जीवन का गहन अध्ययन कर काव्य में अपने अनुभव संसार से नीति, भक्ति, लोकदर्शन आदि का विशद विवेचन किया। इनकी सहज-सरस अभिव्यक्ति के कारण इनके दोहों ने आज लोकोक्ति का रूप ले लिया है।

हिन्दी साहित्य के रीतिकाल के कवियों में कवि वृन्द का विशेष स्थान है।

उद्यम कबहुँ न छाँड़िये पर आसा के मोद।
गागरि कैसे फोरिये, उनयो देखि पयोद॥ 1॥

कुल सपूत जान्यो परै, लखि सुभ लच्छन गात।
होनहार बिरवान के, होत चीकने पात॥ 2॥

अपनी पहुँच बिचारि कै, करतब करिये दौर ।
तेते पाँव पसारिये, जेती लाँबी सौर॥ 3 ॥

उत्तम विद्या लीजिये, जदपि नीच पै होय।
पर्‌यों अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोय॥ 4 ॥

मनभावन के मिलन के, सुख को नाहिन छोर।
बोलि उठे, नचि-नचि उठै, मोर सुनत घन घोर ॥ 5 ॥

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान॥ 6 ॥

अति परिचै ते होत हैं, अरूचि अनादर भाय।
मलयागिरि की भीलनी, चंदन देत जराय ॥ 7 ॥

भले बुरे सब एक से, जौं लौं बोलत नाहि।
जान परतु है काक पिक, रितु बसंत के माहि॥ 8 ॥

सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय ।
पवन जगावत आग कौं, दीपहिं देत बुझाय ॥ 9 ॥

अति हठ मत कर हठ बढ़े, बात न करिहै कोय।
ज्यौं-ज्यौं भीजे कामरी, त्यौं-त्यौं भारी होय ॥ 10 ॥

अभ्यास

बोध प्रश्न

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सच्चे मित्र की क्या पहचान है?
2. अमरबेल का पोषण कैसे होता है?
3. रहीम ने बुरे दिनों में चुप रहने की बात क्यों कहीं है?
4. वृन्द के अनुसार मूर्ख विद्वान कैसे बन सकता है?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ''रहिमन भँवरी के भये, नदी सिरावत मौर'' से क्या आशय है?
2. ''होनहार बिरवान के, होत चीकने पात'' कवि ने किस सन्दर्भ में कहा है?
3. अधिक परिचय बढ़ाने के विषय में कवि वृन्द के क्या विचार हैं?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कौए और कोयल की पहचान कवि के अनुसार स्पष्ट कीजिए।
2. सबल की सब सहायता करते हैं, निर्बल की कोई सहायता नहीं करता है। उदाहरण देकर समझाइए।
3. निम्नलिखित दोहों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

अ- **खीरा सिर तें काटिए, मलियत लोन लगाय।**
रहिमन कडुवे मुखन को, चहिअत यही सजाय॥

आ- **कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुन तीन।**
जैसी संगति बैठिये, तैसोई फल दीन॥

इ- **उद्यम कबहूँ न छाँडिये, पर आसा के मोद।**
गागरि कैसे फोरिये, उनयो देखि पयोद॥

ई- **करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।**
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान॥

काव्य सौन्दर्य

1. **निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के दो-दो अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए-**
मूल, कुल, फल, रस।

2. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-**
दिन, मित्र, सुख, अच्छे, अनादर, सबल, अरुचि, नीच।

3. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-**
पवन, पयोद, आग, कंचन, मोर।

4. निम्नलिखित सूक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

अ- बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।

आ- एकै साधै सब सधै, सब साधे सब जाय।

इ- रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।

5. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात',।

'तेते पाँव पसारिये, जेती लाँबी सौर,'

'ज्यौं-ज्यौं भीजै कामरी, त्यौं-त्यौं भारी होय'।

6. 'काज परै कछु और है, काज सरै कछु और'।
'रहिमन भँवरी के भये, नदी सिरावत मौर॥'

उपर्युक्त पंक्तियों की मात्राएँ गिनकर, छंद की पहचान कीजिए।

रामचरित मानस तुलसीदास का महाकाव्य है और गुप्त जी का पंचवटी खण्ड काव्य की श्रेणी में है। रहीम और वृन्द के दोहों को काव्य की दृष्टि से किस प्रकार की श्रेणी में रखा जाता है?

हम जानते हैं कि रामचरित मानस, पंचवटी में कथा का सूत्र है। प्रत्येक छंद अपने दूसरे छंद से कथा सूत्र द्वारा जुड़े हुए हैं किन्तु रहीम और वृन्द के दोहे एक-दूसरे से अलग, पूर्ण स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं।

जिस काव्य रचना में प्रत्येक छंद अपने आप में पूर्ण एवं स्वतंत्र रहता है अर्थात् एक छंद का दूसरे छंद से संबंध नहीं रहता है, उसे मुक्तक काव्य कहते हैं। जैसे - रहीम और वृन्द के दोहे।

7. हिन्दी में कई कवियों ने मुक्तक काव्य लिखे हैं आप कुछ मुक्तक काव्यों के नाम उनके रचनाकारों के नाम के साथ लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. रहीम और वृन्द के अतिरिक्त कबीर, तुलसी और बिहारी आदि कवियों के नीति संबंधी दोहों का संकलन करके एक पुस्तिका तैयार कीजिए।
2. अपनी कक्षा की दीवारों पर कुछ नीति संबंधी दोहे कार्ड शीट पर लिखकर सजाइए।
3. कक्षा में दोहों की अंत्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।

शब्दार्थ

मूल-जड़, कदली-केला, नीके-अच्छे , भुजंग- साँप, सर्प, सजा - दण्ड, विपति - संकट, फाटे - फट गया, बिगड़ जाना, मीत - मित्र, भँवरी - भाँवर, विवाह, सात फेरे,

गागरि - मटकी, सिल - पत्थर, शिला, पयोद-बादल, सबल - बलवान, सौर-रजाई, लिहाफ,

नाहिन-नहीं, कामरी-कंबल, रसरी-रस्सी, निबल-दुर्बल, कमजोर, जड़मति-मूर्ख,

* * *